"नदरी नदरि"

• ब्रहम बिंदहि ते ब्रहमणा जे चलहि सतिगुर भाई । जिन के हिरदै हरि वसै हउमै रोग गवाई ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा के साथ गहरी साझ डाले रखते हैं, सतिगुर की रज़ा में जीवन व्यतीत करते हैं अपने अंदर से अहंकार का रोग दूर करके जिनके हृदय में सदा परमात्मा बसता है वह मनुष्य हैं असल ब्राहमण ।

गुण खहि गुण संगृहहि जोती जोति मिलाई । इस जुग महि विरले ब्राहमण ब्रहम बिंदहि चित लाई ।

अर्थः- वह ब्राहमण परमात्मा की ज्योति में अपनी तवज्जो जोड़ के परमात्मा के गुण याद करते रहते हैं और परमात्मा के गुण अपने अंदर इकट्ठे करते रहते हैं । पर, हे भाई ! इस मनुष्य जीवन में ऐसे ब्राहमण दुर्लभ विरले ही होते हैं जो मन लगा के ब्रह्म के साथ गहरी सांझ डाले रखते हैं ।

नानक जिन्ह कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाई ।1।म03

अर्थः- हे नानक ! इस प्रकार के ब्राहमणों पर सदा कायम रहने वाला परमात्मा अपनी मेहर की निगाह करता है वह सदा परमात्मा के नाम में तवज्जो जोड़े रखता है ।

• सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ । हउमै रोग कमावणा अति दीरघ बहु सुआउ ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य ने गुरु की बताई हुई सेवा - कमाई नहीं की, जिसका प्यार गुरु के शब्द से ना बना अपने ही मन का मुरीद रह के उसने अनेक चस्कों की ओर प्रेरने वाला बहुत लंबा अहंकार का रोग ही कमाया ।

मनहठ करम कमावणे फिरि फिरि जोनी पाई । गुरमुखि जनम सफल है जिस नो आपे लए मिलाई ।

अर्थः- अपने मन के हठ के आसरे और ही और काम करते रहने के कारण वह मनुष्य बार - बार जूनियों के चक्कर में पड़ता है । हे भाई ! गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्य का जीवन कामयाब हो जाता है पर, वही मनुष्य गुरु की शरण पड़ता है जिसको परमात्मा स्वयं ही गुरु के चरणों में जोड़ता है ।

नानक नदरी नदरि करे ता नाम धन पलै पाई ।2। पउड़ी।

अर्थः- हे नानक ! जब मेहर की निगाह करने वाला प्रभु किसी मनुष्य पर मेहर की निगाह करता है तब वह परमात्मा का नाम धन प्राप्त कर लेता है ।

• सभ वडिआईआ हरि नाम विच हरि गुरमुखि धिआईऐ । जि वसत मंगीऐ साई पाईए जे नाम चित लाईऐ ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा का नाम स्मरण करने में सारे गुण हैं अगर मनुष्य नाम स्मरण करे तो उसके अंदर सारे आत्मिक गुण पैदा हो जाते हैं, पर परमात्मा का नाम गुरु की शरण पड़ने से ही स्मरण किया जा सकता है । हे भाई ! अगर परमात्मा के नाम में चित्त जोड़े रखें तो उसके दर से जो भी चीज मांगी जाती है वही मिल जाती है ।

गुहज गल जीअ की कीचे सतिगुर पासि ता सरब सुख पाईऐ । गुर पूरा हरि उपदेस देई सभ भुख लहि जाईऐ । जिस पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ।3। (850)

अर्थः- हे भाई ! जब दिल की घुण्डी सतिगुर के आगे खोली जाती है तो हरेक किस्म का सुख मिल जाता है । पूरा सतिगुर परमात्मा के स्मरण का उपदेश देता है और नाम - जपने की इनायत से सारी तृष्णा मिट जाती है । पर, हे भाई ! जिस मनुष्य के अंदर आदि से महिमा के संस्कारों के लेख लिखे होते हैं वह ही परमात्मा के गुण गाता है बाकी सारी लुकाई तो माया के जाल में ही फसी रहती है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"